International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 05, No. 04(III), October - December, 2023, pp. 189-193

संगीतकार शंकर जयकिशन और गायिका लता मंगेशकर की सांगीतिक –युति का हिन्दी फ़िल्म संगीत में विशिष्ट योगदान

Dr. Gaurav Jain*

शोध सार

हिन्दी फ़िल्म संगीत की एक ऐसी संगीतकार जोड़ी जिसने भारतीय सिने संगीत को विशेषकर गीतों के ओर्केस्ट्रेशन को अपने अद्वितीय कला कौशल से एक व्यापक स्तर प्रदान किया। ये दो नाम हैं लेकिन सुनने वालों के मन मस्तिष्क पर सदा के लिए एक हो गए – शंकर–जयकिशन जिन्हें सम्पूर्ण फ़िल्म जगत एसजे के नाम से भी पुकारता है।

इस जोड़ी ने 1950 व 60 के दशक में भारतीय फ़िल्म संगीत को अपनी अद्वितीय धुनों और शानदार वाद्य संयोजन से एक नया आयाम दिया । इन धुनों को जब स्वर सम्राज्ञी लता मंगेशकर जैसी अद्भुत आवाज़ का साथ मिला तो श्रोताओं को एक से बढ़कर एक नायाब गीत सुनने को मिले। शंकर जयकिशन ने अपने संगीत निर्देशन में जहां पुरूष गायकों में मुकेश, मोहम्मद रफ़ी और मन्ना डे जैसे गायकों को गवाया वहीं महिलाओं में हमेशा लता जी ही उनकी पहली पंसद रही या यू कहें कि लता मंगेशकर ही शंकर जयकिशन की मुख्य आवाज़ रही।

मुख्य शब्द *: ग्रामोफोन, सिनेमा, संगीतकार, आर्केस्ट्रेशन, साऊंडट्रैक*

उद्देश्य

फ़िल्म संगीत के स्वर्णयुग कहे जाने वाले 1950 व 60 के दशक की महान संगीतकार जोड़ी शंकर जयकिशन एवं महान गायिका लता मंगेशकर ने साथ मिलकर जो सृजनशील और मर्मस्पर्शी रचनाऐं सुनने वालो को दी उनका विश्लेषण करना तथा उनसे जुड़ी विशिष्ट बातों को पाठकों तक पहुंचाना।

शोध प्रविधि/पद्धति

प्रस्तुत शोध पत्र लेखन में वर्णात्मक शोध प्रविधि तथा विषय सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन एवं समीक्षा का प्रयोग किया गया है।

शंकर सिंह रघुवंशी उर्फ़ शंकर का जन्म 15 अक्टूबर 1922 को मध्यप्रदेश में हुआ था लेकिन उनके बचपन के साल हैदराबाद में बीते। पड़ोस के शिव मंदिर में बजने वाली तबले की थाप ने उन्हें उस ताल वाद्य को सीखने के लिए प्रेरित किया और उन्होंने इसे अपने दम पर आगे बढ़ाया । बाद में उन्होंने उस्ताद बाबा

* Associate Professor, Music Vocal, Rajasthan Sangeet Sansthan Jaipur.

नसीर खान से आगे की तालीम ली। वह एक स्थानीय नृत्य और संगीत मंडली में शामिल हो गए ,शास्त्रीय संगीतकारों के साथ जाने लगे और कथक भी सीखा। बाद में वह मुंबई में पृथ्वीराज कपूर के पृथ्वी थिएटर्स में आये, जहां उन्होंने सितार वादन सीखा और छोटे–मोटे अभिनय भी किये। वहां उन्हें एक मित्र और अनुयायी दत्ताराम भी मिले जिन्होंने बाद में वर्षों तक उनके सहयोगी के रूप में काम किया ।

दत्ताराम के आग्रह पर निर्देशक चंद्रवदन भट्ट के कार्यालय शंकर फ़िल्मों में किस्मत आज़माने गए। वहां उसकी मुलाकात एक सुंदर लेकिन शर्मीले आदमी से हुई जो देखने में महत्वाकांक्षी लग रहा था उसने उससे उसका नाम पूछा जबाव था –''जयकिशन पांचाल ।

जयकिशन का जन्म 4 नवम्बर 1932 को गुजरात के रांडा गांव में एक लकड़ी व्यापारी के परिवार में हुआ था। उन्होंने अपने संगीत प्रेमी मंझले भाई बलवंत और स्थानीय संगीत शिक्षक वाडीलाल और प्रेमशंकर नायक से भी संगीत सीखा था। उनकी असामयिक मृत्यु के बाद जयकिशन ने कुछ विविध नौकरियां की लेकिन उनका दिल एक हारमोनियम वादक के रूप में अपना कैरियर बनाने का था। दोनों में दोस्ती हुई और शंकर तुरन्त अपने नए दोस्त को पृथ्वी थिएटर्स में काम पर ले आए। तबले की थाप हारमोनियम के सुरों के साथ विलीन हो गई। लय सुर में विलीन हो गई । मैसर्स शंकर जयकिशन ने टीम के सदस्य के रूप में काम करना शुरू किया।

जयकिशन राज कपूर और शंकर (टीम एसजे) वास्तव में 1949 की फ़िल्म ''बरसात'' में संगीतकार के रूप में एक साथ कैसे आये, यह एक और भाग्यशाली संयोग था। बरसात राज कपूर की दूसरी फ़िल्म थी और इसे बनाने के लिये उन्होंने सचमुच दोस्तों और परिवार से पैसे जुटाए थे। उनकी पहली फ़िल्म 'आग' (1948) आलोचनात्मक प्रशंसा और अच्छे संगीत के बावजूद बॉक्स आफिस पर असफल रही थी। बरसात ने इतिहास रच दिया । इसने आरके बैनर को नाम, प्रसिद्धि और पैसे की बारिश से सराबोर कर दिया। यह कई कलाकारों के लिए स्टारडम लेकर आया। बरसात ने अभिनेत्री निम्मी, लेखक–निर्देशक रामानंद सागर, छायाकार राधू करमरकर और गीतकार शैलेन्द्र और हसरत जयपुरी के कैरियर की शुरूआत की। बरसात ने राज कपूर और नरगिस को 1950 के दशक की सबसे चर्चित स्क्रीन जोड़ी बना दिया । सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि बरसात ने सबसे पहले शंकर जयकिशन को ट्रेंड सेटिंग संगीतकारों के रूप में प्रस्तुत किया और एक अद्वितीय गायन घटना के रूप में लता मंगेशकर की स्थिति की पुष्टि की।

बरसात पहला ग्रामोफोन रिकार्ड था जहां पार्श्व गायकों के नाम को रिकार्ड लेबल पर उल्लेखित किया गया था जिससे स्क्रीन चरित्र के नाम को 'गायक' के रूप में उल्लेखित करने की पिछली प्रथा समाप्त हो गई। हिन्दी फ़िल्म और संगीत उद्योग अंततः पार्श्व गायकों के योगदान के बढ़ते महत्व के प्रति जाग रहा था। यह बिल्कुल सही है कि उस एल्बम की गीत सूची में लता मंगेशकर का नाम प्रमुख था।

बरसात पहली फ़िल्म सांउडट्रेंक थी जहां एक गायक ने विभिन्न स्क्रीन पात्रों के लिए गाना गाया था। यहां लता ने दो नायिकाओं –नरगिस और निम्मी के साथ–साथ अभिनेत्री बिमला के लिए भी गाना गया। यह लता की बहुमुखी प्रतिभा का स्पष्ट प्रभाव था। सदाबहार गानों की चमकदार श्रृंखला पर एक नज़र डालें : 'हवा में उड़ता जाए','बरसात में तुमसे' , 'जिया बेकरार है,' 'प्रेम नगर में बसने वालों', 'बिछडे हुए परदेसी', 'ओ मुझे किसी से प्यार हो गया', 'अब मेरा कौन सहारा' और 'मेरी आंखो में बस गया कोई रे' और आपको जानकर हैरानी होगी कि पहली बार इन्हें सुनने के बाद लता फूट–फूट कर रोने लगीं क्योंकि उन्हें लगा कि उन्होंने इसके साथ पूरा न्याय नहीं किया है। वास्तव में लाखों श्रोता उनकी शानदार प्रस्तुति से मंत्रमुग्ध हो गए ।

आरके और एसजे कैंप में लता के प्रवेश के पीछे एक और दिलचस्प कहानी थी। एक बार एक खूबसूरत युवक लता के घर संदेश देने आया कि राज कपूर ने उन्हें फेमस स्टूडियो में गाने की सिटिंग के लिए बुलाया है। उस आदमी के जाने के बाद लता (जो तब तक राज से व्यक्तिगत रूप से नही मिली थीं) ने अपनी बहन से टिप्पणी की यदि राजकपूर का दूत इतना सुंदर है तो मालिक कितना सुंदर होगा। अगले दिन वह स्टूडियो पहुंची तो उन्होंने 'मैसेंजर बॉय' को हारमोनियम पर बैठे हुए धुन समझाने के लिए पाया । वह जयकिशन था ,लता ने चालाकी से अपनी शर्मिंदगी छिपाते हुए कहा ''ओह, मैंने सोचा था कि आप राजकपूर के

भाई थे''। हर कोई खूब हंसा और कहने की जरूरत नहीं कि जयकिशन इस युवा लड़की से बहुत खुश थे। एसजे कैंप में लता जी का प्रवेश हो चुका था।

अगले दो दशकों में, एस जे ने अपने संगीत की अद्भुत विविधता के साथ बॉक्स ऑफिस पर राज किया । इस जोड़ी ने उस युग के हर प्रमुख गायक जैसे– मोहम्मद रफ़ी, मुकेश, मन्ना डे, पं.भीमसेन जोशी, किशोर, हेमंत कुमार ,शमशाद बेग़म, आशा भोंसले, सुमन कल्याणपुर और शारदा के साथ हिट गाने दिए लेकिन इन विविध कृतियों के बावजूद उनके संगीत का दिल और आत्मा लता के साथ उनकी शानदार युति में रहा जिसके परिणामस्वरूप 124 फ़िल्मों में 453 गीतों का निर्माण हुआ (उनमें से 313 एकल रचनाए थीं)

राज कपूर की फ़िल्में– चाहे वह आर के बैनर की हों या अन्य की ,हमेशा एसजे और लता से सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन लेती थीं। 'इक बेवफ़ा से प्यार किया' (अवरल),'सुनते थे नाम हम' (आह), 'ओ जाने वाली मुड़के ज़रा देखते जाना (श्री 420), 'ओ बंसती पवन पागल, (जिस देश में गंगा बहती है), जैसे बेहतरीन दिल चुराने वाले गीत,'तेरा जाना'(अनाड़ी) और 'लो आई मिलन की रात (आशिक) इस प्रतिभाशाली तिकड़ी की विशेष केमिस्ट्री के उदाहरण मात्र हैं। यह सूची काफी लंबी है।

गीतों ने कुछ यादगार किंवदंतियों को भी जन्म दिया। उदाहरण के लिए आवारा स्वप्न गीत 'घर आया मेरी परदेसी' को लीजिए। शंकर ने अपनी धुन गायक उम्म कुलथुम के प्रसिद्ध मिस्त्री गीत पर आधारित की। दत्ताराम के ने कहाः *''घर आया मेरा परदेसी' एक ऐतिहासिक रिकॉर्डिंग थी । इसे अलग अलग हिस्सों में रिकार्ड किया गया। रिकार्डिंग सुबह 6 बजे से अगले दिन सुबह 9 बजे तक चली। वहां लगभग 150 संगीतकार और 40–50 गायक थे। वास्तविक रिकार्डिंग आधी रात को शुरू हुई लेकिन राज साहब लय से खुश नहीं थे। वे कुछ अलग चाहते थे। तभी हमारे बासुंरी वादक सुमन ने पुणे से आये उत्कृष्ट ढोलक वादक लाला भाऊ का नाम सुझाया। फिर राज साहब ने सुमन को लाला भाऊ को लाने के लिए भेजा। जब वह बडा,काला, पसीने से लथपथ आदमी अंदर आया तो मैं दंग रह गया लेकिन जैसे ही उसने पहला हाथ ढोलक पर बजाया, मैंने तुरन्त कहा–''वाह ! लाला भाऊ, क्या बात है । वह मुस्कुराए और हर कोई खुश था । एक रिहर्सल के बाद ,लता जी को बुलाया गया और गाना रात 2:30 बजे रिकार्ड किया गया ।* इतना जूनून, इतना समर्पण और इतना कठिन प्रयास! आज कोई भी ऐसी यादों पर आश्चर्यचकित हो सकता है।

'आह' से लता जी के गाये 'राजा की आयेगी बारात' के बारे में याद करते हुए अभिनेत्री नरगिस से कहा– *''जैसे ही मैंने लता की आवाज़ में यह मर्मस्पर्शी गाना सुना, तुरंत मेरी आंखों में आंसू आ गए । भारी दिल के साथ, मैं कैमरे के सामने खड़ी हो गई । वास्तव में, लता के भावुक गीतों को स्क्रीन पर प्रदर्शित करते समय मुझे कभी भी नकली आसुओं के लिए ग्लिसरीन की आवश्यकता नहीं पड़ी ।*

एक और समान रूप से मार्मिक आह गीत 'ये शाम की तन्हाइंया' ने शुरू में राज कपूर को प्रभावित नहीं किया था और वह इसे हटाना भी चाहते थे लेकिन जयकिशन के आग्रह पर उन्होंने उस गीत को फ़िल्म में रखा और वह सर्वकालिक क्लासिक गीतों में से एक बन गया । पंक्तियों में लता की अभिव्यक्ति को ज़रा सुनिए–'पत्ते कहें थडके हवा आई तो चौंके हम' यह बहुत गतिशील है।

सबसे मशहूर किस्सा शुद्ध कल्याण राग पर आधारित चोरी–चोरी क्लासिक

'रसिक बलमा' के बारे में है। मेहबूब खान (अंदाज़ ,आन और मदर इंडिया जैसी क्लासिक फ़िल्मों के निर्माता) का लॉस एंजिल्स के अस्पताल में दिल का दौरा पड़ने का इलाज चल रहा था, तभी देर रात लता का फोन बजा। बेचैन मेहबूब फोन पर उनसे रसिक बलमा गाने का अनुरोध कर रहे थे। जब लता ने अपनी जादुई प्रस्तुति से उन्हें बाध्य किया, तभी उन्हें सोने के लिए पर्याप्त शांति महसूस हुई । तब से लेकर डिस्चार्ज होने के दिन तक , हर दिन लता की गायकी मेहबूब के अशांत मन पर अद्भुत प्रभाव डालती रही ।

आर के क्षेत्र के बाहर भी, प्रसिद्ध लता–एसजे युति का जादू चलता रहा। दरअसल,1949 से 1960 तक जयकिशन के संगीत की मुख्य आवाज़ लता ही थीं। आज यह स्वीकार करना होगा कि लता प्रधान वे वर्ष इस जोड़ी के सृजन के सर्वश्रेष्ठ वर्ष थे।

'सूना सूना है जहां' (औरत) ,'अब तो आ जा ओ बलम' (पूनम), 'हमसे ना पूछो' (काली घटा), 'तू क्यों मुझको पुकारे '(मयूरपंख) ,'कहां से मिलते'(राजहठ), 'लो आये दिन प्यार करने के '(नया प्यार) ,'चंद्रमा मदभरा' (पटरानी) ,'इतने बड़े जहां में ऐ दिल' (कठपूतली), 'तुम संग प्रीत लगाई रसिया' (न्यू दिल्ली) और 'अजीब दास्तां है ये'(दिल अपना प्रीत पराई) जैसे गीत लाजवाब हैं। इतने सारे मूड, इतनी सारी धुनें, इतनी सारी यादें। यह वाकई कमाल है। अपने पहले दशक में लता का एसजे प्रदर्शन अंतहीन लगता है। एक गाना चुनें और फिर आप बस उसे याद करते रहें, इन गानों को सुनते समय हमें एहसास होता है कि संगीतकार के रूप में एसजे कितने अलग थे।

अपने समान रूप से प्रतिभाशाली समकालीनों की तरह वे उत्कृष्ट भारतीय धुनें बना सकते थे लेकिन इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि वे अपने गीतों को आम आदमी के लिए आकर्षक बना सकते थे। उन्होंने नवोन्चेषी आर्केस्ट्रा, आकर्षक लय ,आकर्षक कोरस और अंतरराष्ट्रीय संगीत तत्वों के सहज संलयन के साथ ऐसा किया। एसजे गीतों में एक विशिष्ट सिनेमाई अनुभव, भावनात्मक शक्ति और संगीत प्रवाह था। वे कभी भी जड़ता से पीड़ित नहीं हुए बल्कि वे ऊर्जा से भरे हुए थे और एक दुर्लभ उत्साह का संचार करते थे।

60 के दशक में भी यह जादू कायम रहा – 'रूक जा रात ठहर जा रे चंदा' (दिल एक मंदिर), 'आ आ अभी जा' (तीसरी कसम) और सदाबहार रोमांटिक असली नकली का रत्न– 'तेरा मेरा प्यार अमर' ,'मुझे तुम मिल गए हमदम'(लव इन टोक्यो),'अजी रूठकर' 'बेदर्दी बालमा तुझको' (आरजू) जैसे गीत सदाबहार बन गए।

उस युग के कुछ लता प्रधान साउंडट्रैक जैसे कि आम्रपाली (1966) और रात और दिन (1967) ,इस बात का सशक्त प्रमाण थे कि लता की मुखर उपस्थिति ने एसजे के संगीत में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया । एक तरह से यह स्वाभाविक ही था। आम्रपाली के शानदार गीत –'तड़प ये दिन रात की', 'नील गगन की छांव में,' 'तुम्हें याद करते करते,' और 'जाओ रे जोगी तुम जाओ र' को वह उत्कृष्ट अनुभव और कौन दे सकता था? रात और दिन के– 'रात और दिन दिया जले', 'ना छेड़ो कल के अफसाने', 'जीना हमको रास ना आया' और 'आवारा ऐ मेरे दिल' में भावनाओं कि इतनी समृद्ध कशीदाकारी और कौन बुन सकता था ? सीधे शब्दों में कहें तो लता को ही होना था –कोई अन्य विकल्प नहीं था।

जयकिशन ने एक बार कबूल किया था– *'लता को सुनने के बाद कोई अन्य आवाज़ हमारे कानों को इतनी मधुर नहीं लगी'* ।

अपनी पहली ही फिल्म बरसात में उन्होंने राग भैरवी के कई अलग अलग पहलुओं को प्रस्तुत किया था और बाद में भी उन्होंने अधिकांश साऊंडट्रैक में कम से कम एक राग आधारित लता गीत शामिल किया। 'मनमोहना बड़े झूठे' (सीमा, (राग जयजयवंती), 'जाओ जाओ नंद के लाला'(रंगोली ,राग बागेश्री), 'कोई मतवाला आया मेरे द्वारे' (लव इन टोक्यो, राग दरबारी कान्हड़ा),'साजन संग काहे नेहा लगाये' (मैं नशे मैं हूं ,राग तिलंग), 'हम तेरे प्यार में सारा आलम खो बैठे' (दिल एक मंदिर, राग तिलक कामोद), 'झनन झन झनके अपनी पायल' (आशिक, राग शंकरा) और 'तेरे बिना जिया ना लागे' (परदे के पीछे ,राग शिवरंजनी)।

एस जे के कुछ ऐसे भी गीत थे जो एक ही फ़िल्म में दो बार (एक बार पुरूष और एक बार महिला की आवाज़ में रखे गए) ऐसे गीतों को टैंडम सोन्ग कहा गया। ऐसे गीतों में 60 के दशक में अक्सर लता जी और रफ़ी साहब की आवाज़ होती थी। 'एहसान तेरा होगा मुझ पर', 'गर तुम भुला न दोगे,' 'तुम मुझे यूं भुआ न पाओगे,' 'ओ मेरे शाहे खुबां,' 'जिया ओ जिया कुछ बोल दो', आदि कुछ ऐसे लोकप्रिय गीत हैं जिनमें लता जी ने पुरूष (हाइ) स्केल पर गाकर भी उत्कृष्ट प्रभाव छोड़ा है।

निष्कर्ष

फ़िल्म में नायिका के मनोभावों को दर्शाने के लिए शंकर जयकिशन का उत्कृष्ट संगीत और लता जी की पुरकशिश गायकी सदैव प्रभावशाली रही। रूमानी गीत हो, विरह का प्रसंग हो, उपशास्त्रीय धुन हो, यहां तक कि चंचल या कॉमेडी गीत हो, इस जोड़ी ने हमेशा कमाल ही किया । एसजे–लता की युति एक विशाल, अंतहीन महासागर की तरह लगता है जिसका प्रभाव आज तक श्रोताओं और संगीत रसिकों के हृदयपटल पर अंकित है। भारतीय सिनेमा और उसका संगीत सदैव इस युति के अविस्मरणीय योगदान के लिए ऋणी रहेगा ।

संदर्भ :

1. Bhartan Raju ,Lata Mangeshkar A Biography ,UBS Publishers, New Delhi, 1995.
2. www.wikipedia.org.
3. www.britannica.com.
4. मिश्रा यतीन्द्र,लता सुर गाथा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,2016।
5. 5 . www.webdunia.com.
6. 6 .www.hindi.filmibeat.com.
7. Bichu, Dr Mandar, Lata - Voice of the Golden Era, Popular Prakashan, Mumbai 2010.

❖◆❖